Topic 24

गति एवं प्रादि समास

कु-गति-प्रादय:
एते समर्थेन नित्यं समस्यन्ते।
कुत्सित: पुरुष: - कुपुरुष:।

कु, गति-संज्ञक और प्रादि का समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और उस समास को 'तत्पुरुष' कहते हैं। उदाहरण के लिए 'कुत्सित: पुरुष:' (बुरा आदमी) - इस विग्रह में अव्यय-शब्द 'कु' का सुबन्त 'पुरुष:' के साथ समास हो 'कुपुरुष' रूप बनता है। गति संज्ञक और प्रादि के उदाहरण आगे दिये जा रहे हैं। सुविधा के लिए यहाँ पर उनका उल्लेख मात्र किया जाता है —

(क) गति-संज्ञक — 'ऊरीकृत्य', 'पट-पटाकृत्य' और 'शुक्लीकृत्य'

(ख) प्रादि — 'सुपुरुष:', 'प्राचार्य:', 'अतिमाल:', 'अवकोकिल:' और 'निष्कौशाम्बि:' आदि।

ऊर्यादि-च्वि-डाचश्च ।

ऊर्यादयः च्व्यन्ताः डाजन्ताश्च क्रियायोगे गति संज्ञाः स्युः । ऊरीकृत्य ।

शुक्लीकृत्य । पटपटाकृत्य । सुपुरुषः ।

(वा०) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया ।

प्रगत आचार्यः - प्राचार्यः ।

(वा) अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया ।

अतिक्रान्तो मालामिति विग्रहे -

ऊरी आदि च्वि - प्रत्ययान्त और डाच् - प्रत्ययान्त शब्द क्रिया के योग में गति-संज्ञक होते हैं । गति संज्ञक होने पर पूर्व कुगति प्रादयः से उनका समर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है ।

कृ (करना), भू (होना) और अस् (होना, रहना) इन तीन क्रियाओं के साथ ही ऊरी आदि, च्वि-प्रत्ययान्त और डाच् प्रत्ययान्त का योग होता है । इन्हीं कृ आदि धातुओं के साथ ही इनका समास भी होता है । गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक् सुबुत्पत्तेः वार्तिक से सुबन्त होने के पूर्व ही कृदन्त धातु से समास हो जाता है । इस प्रकार गति-संज्ञकों के लिए आवश्यक नहीं कि उनका समास सुबन्तों से ही हो ।

Date
Page

ऐसा समास तो वास्तव में कृदन्तों से ही हो जाता है। उदाहरण के लिए 'ऊरी कृत्वा' (स्वीकार करके) - इस विग्रह में गति-संज्ञक ऊरी का कृदन्त 'कृत्वा' के साथ समास हो 'ऊरीकृत्य' रूप बनता है। इसी प्रकार 'अशुक्लं शुक्लं कृत्वा (जो सफेद नहीं उसे सफेद करके) इस विग्रह में च्वि-प्रत्ययान्त 'शुक्ली' का तथा पटत् पटत् इति कृत्वा (पट पट करके) इस विग्रह में डाच् प्रत्ययान्त 'पटपटा' का कृत्वा के साथ समास हो क्रमशः 'शुक्लीकृत्य' और 'पटपटाकृत्य' रूप बनते हैं।

(वा०) प्रादयः इति - अर्थ है - प्र आदि का प्रथमान्त सुबन्त के साथ गत आदि अर्थ में समास होता है। उदाहरण के लिए 'प्रगत आचार्यः' - इस विग्रह में गत अर्थ में प्रादि 'प्र' का प्रथमान्त सुबन्त के साथ समास हो 'प्राचार्यः' रूप बनता है।

(वा०) अत्यादयः इति — अति आदि का क्रान्त आदि अर्थ में द्वितीयान्त सुबन्त के साथ समास होता है 'अति' आदि भी प्रादि गण में ही आते हैं। उदाहरण के लिए 'अतिक्रान्तो मालाम्' (माला का जो अतिक्रमण कर गया हो वह) इस विग्रह में 'अति'

Date

Page

का क्रान्त अर्थ में सुबन्त द्वितीयान्त
'मालाम्' के साथ समास तथा सुप्-
लोप हो 'अतिमाल' रूप बनता है।
~~क्रम + विभक्ति में~~